REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

# मानव की समता का आधार – मानवाधिकार

डॉ. अशोक वसंतराव मर्डे
अध्यक्ष हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय तुलजापुर.

## प्रस्तावना :

समाज में सुचारू रूप से जीवन जीने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को कुछ स्वतंत्रता तथा कुछ अधिकारो की आवश्यकता होती है। प्रकृति से मिले हुए कुछ अधिकार तथा संविधान से मिले हुए कुछ अधिकारों का उपयोग कर मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास करता है। इसे ही मानवाधिकार कहा जाता है। मानव अधिकारों द्वारा व्यक्ति अपनी भौतिक आवश्यकताओं के साथ–साथ सामाजिक आत्मिक राजनीतिक तथा आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मानव अधिकरों द्वारा व्यक्ति जब अपनी समुचित आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तब राष्ट्रीयता , लिंग, व्यवसाय, रंग, जाति, सामाजिक आर्थिक स्थिति, अवस्था एवं आयु तथा परिस्थितियों के कारण कोई अंतर नही आता।

मानवाधिकार मनुष्य के लिए आत्याधिक आवश्यक है। मनुष्य जीवन गतिमान और विकसनशील है। मानवाधिकारों की प्राप्ति से मनुष्य जीवन में गरीमा एवं सफलता प्राप्त होती है। भाईचारे एवं सम्प्रदायिक बंधुत्व को बल एवं दृढता प्राप्त होती है। जीवन में आनेवाली हर बाधाओं को दूर कर शांति , उन्नति एवं विकास के मार्ग खुल जातेहै।

## 1.2 मानवाधिकार की परिभाषाएँ

जे. ई. एस. फॉसेट – ' मानव अधिकार कभी कभी मौलिक अधिकार या मूल अधिकार या प्राकृतिक अधिकारों के नाम से पुकारे जाते हैं। मौलिक अधिकार वे अधिकार हैं जिनकों किसी व्यवस्थापिका द्वारा छीना नही जा सकता है। प्राकृतिक अधिकार मनुष्य तथा नारी दोनों से संबंधित हैं। साथ ही वे उसके स्वभाव के अनुकूल होते हैं।

लेमन – 'समग्र मानवाधिकार के कल्याण के लिये मानवाधिकार सेवा का दर्शन है। इसका विश्वास है कि मानव का कल्याण तर्क बुध्दि तथा लोकतंत्र द्वारा सम्भव है।'

एल के ओड – 'मानववाद का दर्शन मनुष्य तथा उसके हित को सर्वोपरि मानता है। मानवाधिकार की रूचि न तो काल्पनिक ईश्वर में है और न अमूर्त शाश्वत चिन्तन में उसकी रूचि तथा चिंतन का एकमात्र केंद्र मनुष्य तथा उसकी स्थिति है। उसकी आशाएं तथा आकांक्षाएं, उसके आदर्श उसकी उपलब्धियां तथा दुर्बलताएं, चिंतन की इसी श्रेणी में आती है। कुल मिलाकर रक्त–मांस के बने हुए इस सांसारिक मनुष्य के बारे में चिन्तन ही मानवाधिकार का विषय क्षेत्र है।'

निकोलस हैन्स – 'शिक्षा समस्याओं के प्रति मानवीय दृष्टिकोण मानवाधिकार है, अर्थात मानव प्रकृति एवं मानव हितों को विश्व की संकीर्ण एवं कटटर धार्मिक व्याख्या द्वारा दबाया न जाए, बच्चों की प्रकृति और उसके विकासशील मन को स्कूल के अत्याचारी अनुशासन एवं कठोर शिक्षण विधियों में न दबा दिया जाए। मौलिक रूप से मानवाधिकार का अर्थ है– कटट्रता की बेडियों से विवेक की मुक्ति एवं वास्तविक तथ्यों की निरीक्षण प्रकृति और मानवता का आलोचनात्मक अध्ययन।

जेक्स – मानवीय पूर्णता ही मानवता का लक्ष्य होना चाहिए। जैसे यंत्रवाद यंत्रों की निपुणता को लक्ष्य बनाता है, उसी प्रकार व्यक्ति की कुशलता ही मानवाधिकार का लक्ष्य होना चाहिए।

## 1.3 मानव अधिकार की विशेषताएं

मानवाधिकार मनुष्य के समुचे कल्याण का पक्षधर रहा है। डॉ. विनोद नारायणदास बैरागी ने मानवाधिकार की निम्न विशेषताएं बताई है।

1. मानववाद इस विश्व को किसी के द्वारा निर्मित नही मानता। इसके अनुसार इसके किसी ने नही बनाया अपितु इसका अस्तित्व तो स्वतः ही है।
2. मानवाधिकार के अनुसार यह विश्व भ्रम नही है, अपितु सत्य है। यह परिवर्तनशील है और निरंतर विकासशील है।
3. मानववाद जीवन का जैविक दृष्टिकोण स्वीकार करता है और शरीर तथा आत्मा के द्वैत वाले परम्परागत विचार को नहीं मानता।
4. मानववाद के अनुसार मानव इस सृष्टि का एक अंग है और सृष्टि के विकास को प्रक्रिया का परिणाम है। मानव इस विश्व की सृजनात्मक शक्तियों का उच्चतम फल है जिसके उपर और कुछ नहीं है, केवल आकांक्षाये हैं।
5. विज्ञान ने मानव कल्याण में सहयोग दिया है, इसलिए मानववाद विज्ञान के महत्व को स्वीकार करता है। यह विचारधारा आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों और वैज्ञानिक विधि को मानव हित के लिए उपयोगी मानती है।
6. विज्ञान द्वारा प्राप्त साधनों एवं उपकरणों के द्वारा मानववादी इस पृथ्वी पर सुखमय जीवन का निर्माण करना चाहते है।
7. मानववाद में मानव के महत्व पर अत्याधिक बल दिया गया है। मानव का इस सृष्टि का सबसे सुंदर जीव बतलाया गया है। मानव में रचनात्मकता का गुण विद्यमान है।
8. मानववाद में मानव को न तो केवल एक यंत्र और मशीन माना गया है और न ही केवल एक जीव माना गया है, अपितु उसे असीम सम्भावनाओं से युक्त माना गया है।
9. मानववाद के अनुसार सत्य, शिव, सुन्दरम् के आदर्श को प्राप्त करना मानव का लक्ष्य होना चाहिए।
10. मानववाद दर्शन विज्ञान, कला और साहित्य के माध्यम से जीवन के नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की खोज करने का प्रयत्न करना है।

## 1.4 मानवाधिकार का स्वरूप

मानवाधिकर मनुष्य के कल्याण और आनंद पर केंद्रित है, मानवीय पूर्णता ही मानवता का लक्ष्य होना चाहिए। जिस प्रकार यत्रवाद में यंत्रों की निपुणता को लक्ष्य बनाया जाता हैउसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की कुशलता ही मानवाधिकार का लक्ष्य होना चाहिए। मानवाधिकार कटटरता एवं अंधविश्वास की बेडियों में जकडे हुए मानव को मुक्ति दिला कर वैज्ञानिक खोज के लिए मार्ग प्रशस्त कर देता है।

मानव अधिकारों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। संसार के सारे कानून नियम संविधान संस्कार अथवा परंपराएं मानव अधिकारों के संरक्षण के प्रयास के लिए एवं उनके हनन को रोकने के लिए ही बनाये गये है। प्राचीन समय में राजा का प्रथम कर्तव्य होता था कि वह अपनी प्रजा को हर प्रकार से सुरक्षा प्रदान करें एवं उनकी सुख–सुविधाओं का ध्यान रखें। आदर्श नागरिकता, प्रजातंत्र और मानववाद एवं राष्ट्रीय एकता, आंतरराष्ट्रीय भावना जैसे मूल्य समाज एवं राजनीति दोनों का स्पर्श करते है। व्यक्ति समाज की अन्यतम इकाई है। व्यक्तियों से ही समाज का और समाज से ही व्यक्तियों का अस्तित्व है।[1]

मानव की सेवा करना मानवता का धर्म है। समूची मानव जाति का हित करना मानवाविधार का लक्ष्य है। शांति इसका संकल्प है। मानवाधिकार युध्द का घोर शत्रु है। धरती पर शान्ति एवं खुशहाली की स्थापना करना मानवाधिकार का उददेश्य है।

## संदर्भ संकेत :

1. डॉ. बैरागी विनोद नारायणदास, मानवअधिकार सिध्दांत एवं व्यवहार, फलैप से .